PM College of Excellence Shri Atal Bihari Vajpayee Government Arts and Commerce College, Indore (M.P.)

In the aegis of Commerce and IQAC

One Day National Seminar 09th September 2025 विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता

A National Research Seminar on the topic "विकिसत भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता" was organized on 09th September 2025 at SABV GACC, Indore. It was an honourable moment for the College to host the eminent educationalists and prominent personalities from the field of culture and national interest. This seminar was of educational and national importance. The aim was to make people aware of a national pride and glorious past in field of Education, Science and Technology, Management, Culture, Literature, Environmental Practices, Agriculture and Industrial Technology etc. This National Research Seminar was organized in the joint supervision of Shiksha Sanskriti Utthan Nyas, New Delhi. Hon'ble Dr. Atul Kothari was the Key Note Speaker who spoke extensively on the importance of revival of India's glorious past and leadership in every field in the ancient India. The other esteemed guest were Mr. Om Prakash Sharma, Madhya Pradesh Convenor, Shiksha Sanskriti Utthan Nyas, Ms. Shobha Tai Paithnkar, National Chief, Mahila Karya Shiksha Sanskriti Utthan Nyas. The Chief Patron was the Additional Director of Indore Division Dr. R.C. Dixit. The eminent guests of the day one Honourable Vice Chancellor of Devi Ahilya Bai Holkar University, Indore Dr. Rakesh Singhai, Shri Ram Sagar, Dr. A.K. Dwivedi, Mr. Sachin Sharma. National Research Seminar was hosted under the dynamic patronage of Prof. (Dr.) Mamta Chandrashekhar, Principal SABV GACC, Indore. The National Research Seminar was organized in the convenorship of Dr. D.N. Purohit. The spirit behind the National Research Seminar was Dr. Sanjay Prasad, Organizing Secretory. All the faculties and support staff of the college made this National Research Seminar, a very successful intellectual deliberation. National Research Seminar organized on the hybrid mode. More than 300 registrations for the participation were done. There were two sessions, Inaugural Session and Closing Session. In the Inaugural Session there were lectures delivered by the Guests and the Principal. In the post lunch session about 22 research scholars presented papers online and about 24 research scholars presented in offline mode. The topics were of Cultural Importance of Indian Value System and its relevance in todays Education System. The National Research Seminar can be called immensely successful because of the eminent speakers and participation of scholars. The HOD of Commerce Dr. Prakash Garg, The Nodal Officers of the College Dr. D.K. Gupta, Dr. Mahesh Gupta and IQAC Co-ordinator Dr. Venu Trivedi contributed towards the success of the Seminar. The program session were conducted by Dr. Sandhya Bhargava and Dr. Manisha Markam. The Seminar was extensively covered by print media and digital media.

























भारती ज्ञान परम्परा ही बना सकती है विश्व गुरु – डॉ . अतुल कोटारी

इंदौर। धर्म को जबसे हमने कर्म से बाहर कर दिया है तब से देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं बढ़ गयी है। समस्याओं को जड़ से हटाने के लिए धर्म से जुड़ना होगा। यह बात शिखा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचीव डॉ. अतुल कोठारी ने कही वे विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपर की प्रासंगिकता विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्टी में बोल रहे थे।

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सिलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में मंगलवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचीव डॉ. अतुल कोठारी विशेष अतिथि के रूप में म.प्र. लोक सेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभा ताई पैठनकर, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के मध्य क्षेत्र संयोजक ओमप्रकाश शर्मा व देवी अहित्या विश्वविद्यालय के कुलपति राकेश सिम्बई उपस्थित हुए। कार्यक्रम में डॉ. कोठारी ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को विकसित करना होगा। इसके लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को भारतीय ज्ञान परंपर से जोड़ना होगा। शिक्षा ही सबका आधार है। उन्होने कहा कि एक समय पहले भारत विश्व गुरू था लोग व्यवसाय व कला तक सिखने हमारे पास आते थे क्योंकि हम अपनी संस्कृति और



परंपरा से जुड़े थे। दुबारा हमे विश्वगुरु बनने के लिये भारतीय ज्ञान परम्परा से जडना होगा।

शिक्षा के साथ कौशल भी-कार्यकम के विशेष अतिथि ओमप्रकाश शर्मा ने कहा कि देश को विकस्ति करने के लिए विद्यार्थी को स्वय को आत्मनिर्भर बनाना होगा। ज्ञान के साथ कौशल भी सीखना होगा। जब तक हम स्वयं आत्मनिर्भर नहीं बनेगे देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकेगा।

हमारी परम्परा में छुपा परमाणु सिद्धांत

जब विश्व डाल्टन के परमाणु सिद्धात पर बात कर रहा था उसके कई सालों पहले हमारे ऋष कणाद परमाणु सिद्धांत हमे समझा चुके थे। यही हमारी भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता है। यह बात देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलगुरू डॉ. ग्रकेश सियई ने कही। उन्होंने कहा कि वर्तमान में श्वानों को लेकर जो विवाद चल रहा है उसमें एक पक्ष उनके संख्यण की मांग कर रहा है। यह हमारी भारतीय ज्ञान परंपर को ही दर्शाता है। हम प्रत्येक जीव में परमात्मा को देखते है। इस मौके पर म.प्र. लोक सेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभा ताई पैउनकर ने कहा कि राष्ट्र को बदलना है तो शिक्षा को बदलना जरूरी है। इस चात को ध्यान में रखकर नई शिक्षा नीति 2020 बनाई गई है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा विभाग , इंदौर संभाग के आर. सी.दीक्षित ने कहा कि देश को विश्व गुरु बनाने के लिए हमे अपनी जड़ो से जुड़ना होगा। इस मौके पर महाविद्यालय की प्राचार्य ममता चन्द्रशेखर ने कहा कि मां के आंचल, पिता के भाव व दादाजी के बचनों में हमारी संस्कृति, हमारी परम्परा छुपी है। जिसे शिक्षा के जरिए नई पीढ़ी तक पहुंचाना होगा।

कार्यक्रम के समापन सत्र में राष्ट्रीय सेवा योजना के जिला समन्वयक डॉ सचिन शर्मा, समाजसेवी विनोद बिड्ला, होम्योपैधी के विशेषज्ञ डॉ.अश्विनी कुमार दूबे मुख्य रूप से उपस्थित हुए एवं उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी में 46 शोध पत्रों का ऑनलाइन और ऑफलाइन वाचन किया गया। इस मौके पर भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बंधित पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगायी गयी। संगोष्टी में मुख्य रूप से डॉ.प्रकाश गर्ग, डॉ.दिनेश पुरोहित, डॉ.आशीष पाठक , डॉ. संध्या गोयल एवं अन्य गणमान्य प्राध्यापक एवं शोधार्थी उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. संध्या भार्गव ने किया आभार डॉ संजय प्रसाद ने माना। उक्त जानकारी डॉ.बन्दना जोशी ने दी।

भारती ज्ञान परम्परा ही बना सकती है विश्व गुरु-डॉ . अतुल कोठारी

अंतिम युद्ध - संजय बाबा यादव

खरगोन। धर्म को जबसे हमने कर्म से बाहर कर दिया है तब से देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं बढ़ गयी है। समस्याओं को जड़ से हटाने के लिए धर्म से जड़ना होगा। यह बात शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचीव डॉ. अतुल कोठारी ने कही वे विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोल रहे थे। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सिलेंस श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय में मंगलवार को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचीव डॉ. अतुल कोठारी विशेष अतिथि के रूप में म.प्र. लोक सेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभा ताई पैठनकर, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के मध्य क्षेत्र संयोजक ओमप्रकाश शर्मा व देवी अहित्या विश्वविद्यालय के कुलपति राकेश सिघई उपस्थित हुए। कार्यकम में डॉ. कोठारी ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को विकसित करना होगा। इसके लिए देश के प्रत्येक क्षेत्र को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोडना होगा। शिक्षा ही सबका आधार है। उन्होने कहा कि एक समय पहले भारत विश्व गुरू था लोग व्यवसाय व कला तक सिखने हमारे पास आते थे क्योंकि हम अपनी संस्कृति और परंपरा से जुड़े थे। दुबारा हमे विश्वगुरु बनने के लिये भारतीय ज्ञान परम्परा से जुड़ना होगा।

भारतीय ज्ञान की पहली शिक्षा नीति -

डॉ. अतुल कोठारी ने अपने उद्बोधन में कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। पर यह पहली



शिक्षा नीति है जो भारतीय परम्परा से जुडी है। उन्होंने कहा कि इस शिक्षा नीति का उद्देश्य ऐसे नागरिक बनाना जो सिर्फ देखने से भारतीय ना लगे बल्कि उनके विचार, कार्य व्यवहार और बोधिकता भी भारतीय हो। मैकाले की शिक्षा नीति ने हमे शरीर से भारतीय बनाया पर हमारे दिल व दिमाग को अंग्रेजी का गुलाम बना दिया। उन्होने कहा की भारतीय जान परम्परा के लिये भारतीय तत्व दर्शन को समझना होगा। डॉ. कोठारी ने कहा कि महाभारत रामायण हमारे आधार है इनके मुलतत्व को लेकर पाठ्यक्रम का निर्माण करना हमारे सामने चुनौती है। विश्व सुख शांती स्थापित करना ही भारतीय ज्ञान परम्परा का लक्ष्य है। शिक्षा के साथ कौशल भी- कार्यक्रम के विशेष अतिथि ओमप्रकाश शर्मा ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए विद्यार्थीं को स्वय को आत्मनिर्भर बनाना होगा। ज्ञान के साथ कौशल भी सीखना होगा। जब तक हम स्वंय आत्मनिर्भर नहीं बनेगे देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकेगा। उन्होंने कहा कि हम सिर्फ यह ना सोचे कि देश ने हमें क्या दिया. हम यह सीचे कि हमने देश को क्या दिया।

भारतीय ज्ञान परंपरा ही बना सकती है विश्व गुरु

नईदनिया प्रतिनिधि, इंदौर: प्रधानमंत्री कालेज आफ एक्सीलेंस शासकीय कला व वाणिज्य महाविद्यालय में विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास (दिल्ली) के राष्ट्रीय सचिव डा. अतल कोठारी ने कहा जबसे हमने धर्म को कर्म से अलग किया है, तभी से देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं बढी हैं। समस्याओं का समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा से ही संभव है। एक समय भारत विश्व गुरु था क्योंकि हम अपनी संस्कृति और परंपरा से जुड़े थे। यदि हमें फिर से विश्व गुरु बनना है तो भारतीय ज्ञान परंपरा को अपनाना होगा।

डा. कोठारी ने नई शिक्षा नीति 2020 को भारत की पहली ऐसी नीति बताया जो भारतीय परंपरा से जुड़ी है। उनका कहना था कि इस नीति का उद्देश्य ऐसे नागरिक तैयार करना है जिनके विचार और कार्य भारतीयता को दर्शाएं। विशेष अतिथि ओमप्रकाश शर्मा ने विद्यार्थियों से ज्ञान के साथ कौशल सीखने और आत्मनिर्भर बनने का आह्वान किया।

'Indian knowledge tradition key to becoming vishwa guru'

Our Staff Reporter

INDORE

"Only Indian knowledge tradition can make India a Vishwa Guru again," said national secretary of Shiksha Sanskriti Utthan Nyas, New Delhi, Dr Atul Kothari, while addressing a national symposium on the relevance of Indian knowledge systems in the context of a developed India. The event was organised on Tuesday at Prime Minister College of Excellence, Atal Bihari Vajpayee Government Arts and Commerce College.

Dr Kothari emphasised that separating religion from action has led to corruption and social issues. He urged reconnecting with Indian values, stating that true development requires each sector of the country to be rooted in knowledge traditions. Highlighting India's past glory, he said, "There was a time when the world came to India



Dignitaries light a ceremonial lamp before Lord Ganesha at the national symposium on Indian knowledge traditions, hosted at SABVGACC

to learn art and trade because we were deeply connected to our culture. To reclaim that status, we must revive our heritage." He described the National Education Policy 2020 as the first policy truly based on Indian tradition.

Guest speakers further expanded on this theme. Omprakash Sharma, zonal convenor (Central Region), Shiksha Sanskriti Utthan Nyas, stressed skill development alongside knowledge for self-reliance, while vice-chancellor, Devi Ahilya Vish-wavidyalaya, prof Rakesh Singhai, reminded the audience that concepts like the atomic theory were explored by Indian sages centuries before Dalton. Former MPPSC chairperson, Shobha Tai Paithankar, highlighted how the NEP integrates character, environment, health and technology.

भारती ज्ञान परम्परा ही बना सकती है विश्व गुरु : डॉ. अतुल कोठारी

कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। पर वह पहली शिक्षा

नीति है जो भारतीय परम्परा से जुड़ी है। उन्होंने कहा कि इस शिक्षा नीति का उद्देश्य ऐसे नगरिक बनाना जो सिर्फ देखने से भारतीय ना

लो व्यक्ति उनके विचार, कार्य व्यवहार और वेधिकता भी भारतीय हो। मैकाले की शिक्षा

नीति ने हमे शरीर से भारतीय बनाया पर हमारे

दिल व दिमाग को अंग्रेजी का गुलाम बना

दिया। उन्होंने कहा की भारतीय ज्ञान परम्परा

के लिये भारतीय तत्व दर्शन को समझना

होगा। डॉ. कोठारी ने कहा कि महाभारत समायण हमारे आधार है इनके मुल्तात्व को

लेकर पाठवकम का निर्माण करना हमारे सामने

चुनौती है। विश्व सुख शांती स्थापित करना ही

भारताथ ज्ञान परम्पता का टाइय है। शिक्षा के साथ कौशल भी• कार्यकम के विशेष अतिथि ओमाकाश शर्मा ने कहा कि देश को विकसित करने के लिए विद्यार्थी को

स्वय को आत्पनिर्भर बनाना होगा। जान के

साथ कौशल भी सीखना होगा। जब तक हम

स्वंद आत्पनिर्भर नहीं खनेंगे देश आत्पनिर्भर

नहीं बन सकेगा। उन्होंने कहा कि हम सिर्फ यह ना सोचे कि देश ने हमें क्या दिया, हम यह

भारतीय जान परम्परा का लक्ष्य है।

चैतस्य लोक • इंदौर chaitanyalok.page

धर्म को जबसे हमने कर्म से बाहर कर दिया है तब से देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं बढ़ गयी है। समस्याओं को जड़ से हटाने के लिए धर्म से जुड़ना होगा। यह बात शिक्षा संस्कृति उस्थान न्यास, मई दिस्ली के राष्ट्रीय सर्वीय डॉ. अतुल कोठारी ने कही वे विकसित भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञन परंपरा की ग्रासंगिकता विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्टी में बोल रहे थे।

प्रधानमंत्री कांलिज आँक एकिसलेंस श्री अटल किसी वाजपेकी शासकीय कला एजं कांलिज महालिकालम में मंगलका को लटीय संगोटी का आयोजन किया गया। इस मीके पर मुख्य अर्कीय के रूप में शिक्षा कंजुकी उक्कान नवस के एटीय स्वोच डी. अपूल कोटणी श्रियोध अर्कीय के रूप में म.प. लोक सेना आयोग की पूर्व अरुक्य शोमा तह पैठनकर, शिक्षा संस्कृति उक्कान नयास के माम येड प्रसंकेका ओमानकार शर्मा य देशी अहित्सा विश्वविद्यालय के कुलसी एकेशा किसई उपस्थिता हुए। कार्यकाम में डी. मोठीडी ने कहा कि रोग किस्तिस्ता करने के लिए देश के प्रस्तिक देश को मिलसिस करना होगा इसके लिए देश के प्रस्तिक वेश को मामा जाभार हिंदी होता होगा शिक्षा हो समस्य अराम ही । उन्होंने कहा कि एक समय पहले माल विश्व गुरू था लोग व्यवस्थाय व कराना देश संस्कृति और परंस्ता से जुड़े थे। युवाण हमे संस्वार्थ कीर परंस्ता से जुड़े थे। युवाण हमे से जुड़ना होगा।

भारतीय ज्ञान की पहली शिक्षा नीति -

पहली शिक्षा नीति - वह ना सोचे कि देश ने हमे क्या दिः डॉ. अतुल कोठारी ने अपने उद्योधन में सोचे कि हमने देश को क्या दिया।



हमारी परम्परा में छुपा परमाणु सिद्धांत

जब विश्व डल्टन के परमाणु सिद्धान पर जान कर रहा था उसके वह पहलों प्रत्न हमार्ग डॉल कम्मार परमाणु सिद्धान हमें स्पष्ट आ कुते थे। बही हमारी भारतीय जान परंपा की विशेषता है। यह जल देशी अर्थित्या विशेषता है। यह जल देशी अर्थित्या विश्व के प्रत्न कर कि क्षांपन में प्रवानों के के कही उन्हेंने कहा कि जर्मामन में प्रवानों के किस में प्रवास को प्रकार कर हमारी भारतीय जान परंपा। को है दर्शन है। इस भारतीय जान परंपा। को है दर्शन है। इस अर्थ किस स्थित होना पड़ेगा न कि किसी देश के स्था अपनी तुल्ला करने हम की पर मार, लोक सेवा अपनी तुल्ला करने हम की पर मार, लोक सेवा अपनी तुल्ला करने हमारी हमार का रिक्षा की अर्थाण की पूर्ण अञ्चल शोध कर है। इस साथ अपनी तुल्ला करने हमारी हो। इस जान की ध्यान में एककर नई रिक्श बीटी 2020 जब्हें है। इस शोध मीरी करना है हो। इस जान की ध्यान में एककर नई रिक्श की हमार की भारतीय जन परंपा को ध्यान में रखकर किया गय है। इसमें चिरत निर्माण के साथ पर्यावल, व्यास, जरनीय को भी स्थान रिवा गय है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर से अतिरिक्त संचारक उच्च शिक्षा श्रियाग, इंदौर संभाग के अस. सी.जीवन ने कहा कि देश को शिख्य गुरु बनाने के हिन्दर हमें अपनी जड़ो से जुड़न होगा। इस मीके पर महाजिखालान की प्राचार्थ माना चन्द्रशीयलं ने कहा कि मां के अर्थवन, चिता के भाव व वदाजी के वचनों में हमारी संस्कृति हमारी परम्पा छुनी है। जिसे शिक्षा के जार्दर वह पीड़ कर चहुंचका होगा। कार्यक्रम के समाचन सज में छाट्टीय सेवा



इंदौर, बुधवार 10 सितंबर 2025

'भ्रष्टाचार को जड़ से हटाने के लिए धर्म से जुड़ना होगा'

इंदौर। अटल बिहारी वाजपाई शासकीय कला-वाणिज्य महाविद्यालय (जीएसीसी) में राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता विषय पर शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी ने कहा कि धर्म को जब से हमने कर्म से बाहर कर दिया है, तब से देश में भ्रष्टाचार जैसी समस्याएं बढ गई

हैं। इसे जड़ से हटाने के लिए धर्म से जुड़ना होगा। भारतीय ज्ञान परंपरा ही हमें विश्व गुरू बना सकती है। डॉ. वंदना जोशी ने बताया कि



मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग की पूर्व अध्यक्ष शोभा ताई पेठनकर, ओमप्रकाश शर्मा, कुलगुरू राकेश सिंघई, प्राचार्य ममता चंद्रशेखर ने भी अपनी बात

कही। संगोष्ठी में 46 रिसर्च पेपर पढ़े गए। संचालन संध्या भार्गव कर रहीं थीं। आभार डॉ. संजय प्रसाद ने माना।

भारती ज्ञान परम्परा ही बना सकती है विश्व गुरु-डॉ. अतुल कोठारी

नग औह एक्सलास क्रां अटल विद्यालय पिंचालय में मेरलावर को राहिय सोहित का मेरल किल क्या इस मेरीलार मुख्य अतिथि पर में जिल्ला सोहित देवसन क्यार को राहिय विद्यालय किला मेरला विवास अतिथि के स्था प्रश्लोक सेला अस्यों को पूर्व अस्याल की 'हमकर, जिल्ला सोहित क्रथान क्यार के 'हमकर, जिल्ला सोहित क्रथान क्यार के 'हमकर, जिल्ला सोहित क्रथान क्यार के 'हमकर, क्लिला सोहित क्रथान क्यार के पविश्वविद्यालय के कुलबीत सकेशसियाई ल कुछ नवर्षकम गैंडी नोजरी ने कहाकि है विकसित करने केलिए देश के पृत्येक



भारताथ झान क्या पहला शासा नाता द्वी. अनुत मोजरी ने अपने द्वांपन में कहा कि न्दितिकारीत 2020 पात कीती हो राख्य मीत है पर यह पहले जिल्ल मित्र होने मा माहीय परमासी में हुने हैं अन्तरी ने क्यांतिक रिक्का का दौरवपीस नाहिस बनाव जीतिकार के देखने से प्राचीय जा लो बहिस्स करने विचार, कार्य परमाहा और वीतिकार मार्ग भारतीय हो मैकरले भी जिल्लामीति ने हमें तहिस साहित्य समाया पर

क्वींक हम अपनी संकर्षत और प्रांपस से जुड़े थी। पुरास हमें विकास करने के लिये भारतीय जनपास से जुड़ानतीय भारतीय जान पर्यास के लिये भारतीय भारतीय जान की पहली शिक्षा नीति यें. अनुस कोटारे में अपने द्वांपस में का कि चूरिक्स नीति 2020 भारत की नीति रिक्स विक्रिय प्रांपस कर स्वास की स्वास की स्वास की स्वास कर साथ साथ मुंचती विक्र स्वास कर साथ साथ मुंचती विक्र स्वास कर साथ साथ में का

शिक्षा के साथ कौशत भी

कर्यक्रम के विकेष अतिथि अंग्यकात रार्म ने कहा कि देत को विकस्तित कसे के लिए विद्यार्थों को स्वय को आग्मिर्धर बनना होगा।

हमारी परम्परा में छुच परमाणु सिद्धात

ज्यविश्व खल्टन के परमणु सिद्धत पर बात कर रह था उसके कई सालों पहले हमारे खीव कराद एमस्पु सिद्धत हमें समझ चुके थे उसी हमारी भासीय जन परेपा की वर्तकरता है। यह बात देवी औहत्या मिळीवातालय के कुलकुर की, बकेतास्पर्ध ने कही। उन्हों ने कहाकि वर्तमान में

वार केसाथ कोरास भी संद्राज है रा जम करू हम मध्य अवसारिंग राजी बनेरे देव अवसानिर्ग एक उनके संक्रमण में महे कर सा है उससे एक स्त्री जम मध्येगा नहीं कर्जी के हमारिक्श जा शाहित वार परित को है उन्होंने का हमारिक संबंधिक रेज ने सोमेच्य पिर्या हम यह सो चीक अंद्रामी परमाल को सेवारी के उन्होंने कातिक देव भारीय वान प्रपेश कोई उन्हों है इस प्रयोक्त लेक्सी समझ्य को होड़े हैं उन्हों के निक्र के विकासिक काने के लिए तथी विकासिक होंचा पड़ेंगा नहि किसी देंग के साथ अपनी जुड़े ना लंका हुए की प्रपादका के साथ अपनी जुड़े ना लंका हुए की प्रपादका के साथ अपनी जुड़े ना पूर्व अध्यक्ष को पाड़ाई दिन्हमंत्र ने कार्ति के इस्को सहस्त्र है होते हिंका से स्वक्तन निक्री के साथ पाड़ा के बार को प्याम में स्थानत नहीं विकासीय 2020 बनाई पड़े हैं हम किसा निक्री का निक्रमा लिया स्था है इसमें च्यादा निक्षम लिया स्था है इसमें च्यादा निक्षम स्थान